ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए।
ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए।। २९ ।।

अब मैंने इस अहं के परदे को अच्छी तरह से जान लिया। अब कोई इस अहं के परदे को उड़ा दे, परन्तु धनी ने यह निश्चित कर दिया है कि यह परदा (अहं का) उनके हुकम के बिना नहीं हटेगा।

मारा कह्या काढा कह्या, और कह्या हो जुदा।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा।। ३० ।।

मैं कहती हूं कि मैंने 'मैं' (अहं) को मार दिया, निकाल दिया, अलग कर दिया पर इन शब्दों में भी जो 'मैं' आई (मैंने कर दिया इत्यादि) यदि हट जाए तो फिर बाकी धनी ही रह जाते हैं।

पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर।। ३१ ।।

इस 'मैं' (अहं) को मिटाने के लिए पहले मौत का शर्बत पी और तुम्हें यह निश्चित हो जाए कि तुम्हारा अहं समाप्त हो गया है तो एक जरा सा भी संशय धनी के प्रति मत रखो। उसके बाद संसार में जीना और मरना तुम्हारे लिए एक जैसा हो जाएगा।

एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें।
तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें।। ३२ ।।

यही 'मैं' (अहं) का परदा आत्मा और धनी के बीच है और कुछ भी नहीं है। इसके हटा देने से संसार में जीते हुए परमधाम का सुख लिया जा सकता है।

ए सुन्या सीख्या पढ़्या, कह्या विचार्या विवेक।
अब जो इस्क लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक।। ३३ ।।

यह सब कुछ मैंने सुना, सीखा और पढ़ा। इस पर विचार भी किया। अब आत्मा जो आपका इश्क ले रही है, वह सब कुछ समाप्त कर एक धनी को पाने के वास्ते ही है।

तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन।
सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन।। ३४ ।।

तभी तुम्हारी दोस्ती सच्ची कहलाएगी और तुम मोमिन कहलाओगे। यदि तुम इस मंजिल तक पहुंच जाओ तो तुम्हारी बड़ी शोभा है।

महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार।
खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार।। ३५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे वतन के साथियो सुन्दरसाथजी! धनी आप से अहंकार की कुर्बानी चाहते हैं, इसलिए 'मैं' (अहं) मारने के रास्ते पर आ जाओ।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ८९ ॥

मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सों मारना मैं।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे।। १ ।।

इस संसार की 'मैं' (अहं) धनी की 'मैं' के बिना नहीं मरेगी, अर्थात् संसार से चित्त हटाकर जब धनी में चित्त लग जाएगा तो धनी मेरे हैं यह भाव आ जाएगा और संसार की 'मैं' मिट जाएगी। फिर मुंह से यही निकलेगा धनी के हुकम से हुआ है, हो रहा है और होगा।

Nijanand App

और भी हकीकत मैंय की, जिन विध मरे जो ए।
सो ए खसम बतावत, बल अपने इलम के।। २ ।।

'मैं' (अहं) को मारने का और भी दूसरा तरीका है जिससे संसार का अहं 'मैं' भाव मारा जा सकता है। अब धनी अपने तारतम ज्ञान की वाणी से 'मैं' (अहं) को मारने का तरीका बताते हैं।

अब मैं मरत है इन विध, और न कोई उपाए।
खुदाई इलम सों मारिए, जो हकें दिया बताए।। ३ ।।

'मैं' (अहं) इस तरह से मरती है। इसका और दूसरा उपाय नहीं है। धनी कहते हैं इस 'मैं' (अहं) को खुदाई इलम से मारो।

जो मैं मारत अव्वल, तो कौन सुख लेता ए।
है नाहीं के फरेब में, सुख नूर पार का जे।। ४ ।।

यदि 'मैं' (अहं) को पहले ही मार देती तो यह दुनियां में अर्श का सुख कैसे मिलता। वह "है" अर्थात सत परम धाम का सुख जो अक्षर के पार है, इस झूठे छल में छिपा है।

मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मार्या मैं।
अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम से।। ५ ।।

इस दुनियां की 'मैं' (अहं) को धनी की 'मैं' ने मार दिया है। यह धनी की 'मैं' जो धनी की कृपा से आई है वह अब कैसे मर सकती है?

मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम।
इन विध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम।। ६ ।।

हे धनी! आपने ऐसा बल दिया कि मैं आपकी अंगना आपके चरणों में चलकर आ गई। आपकी कृपा के बिना यह सम्भव नहीं था कि मैं दुनियां की 'मैं' (अहं) को छोड़कर आती।

जो मैं मारत आपको, तो आवत कौन कदम।
मैं ना होने में कछू ना रह्या, किया कराया खसम।। ७ ।।

यदि मैं खेल में अपनी 'मैं' (अहं) को पहले ही समाप्त कर देती तो आपके चरणों में कौन आता? मेरी 'मैं' (अहं) समाप्त होने पर मेरे अन्दर कुछ रहता नहीं सिवाए यह कहने के कि करने और करवाने वाले धनी आप ही हैं।

ना मैं अव्वल ना आखिर, मैं नाहीं बीच में।
बन्या बनाया आप ही, सो सब तुम हीं से।। ८ ।।

मैं शुरू, मध्य और आखिर में कहीं नहीं थी। यह जो कुछ भी हो गया है, वह सब आपसे ही होता है और आप ही बनाने वाले हैं।

मैं तो तुमारी कीयल, अव्वल बीच और हाल।
तुम बिना जो कछू देखत, सो सब मैं आग की झाल।। ९ ।।

हे धनी! मैं तो शुरू में, मध्य में और अब भी आपके हुकम से बंधी हूं। आपके बिना और जो कुछ भी दिखता है वह सब अग्नि की लपटें हैं।

Nijanand App

जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं।
समझे थें मैं उड़ गई, सब कछू हुआ तुम से।। १० ।।

जब तक मैं इस रहस्य को नहीं समझी थी तब तक मेरे अन्दर 'मैं' (अहं) था। अब समझ आने से मेरा 'मैं' (अहं) उड़ गया और यह समझ आ गया जो कुछ हो रहा है आपके हुकम से ही हो रहा है।

अव्वल आखिर सब तुम, बीच में भी तुम।
मैं खेली ज्यों तुम खेलाई, खसम के हुकम।। ११ ।।

शुरू में, बीच में तथा आखिर में सब जगह पर आपने ही किया कराया है। मुझे आपने जैसा खेलाया वैसा खेली।

इन मैं को तो तुम किया, आद मध्य और अब।
और मैं तो नेहेचे नहीं, कितहूं न देखी कब।। १२ ।।

इस 'मैं' (अहं) को आपने ही शुरू, मध्य और आखिर में दिया है। वरना यह अहं तो कुछ था ही नहीं और न कभी देखा समझा ही था।

केहेत केहेलावत तुम ही, करत करावत तुम।
हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम।। १३ ।।

अब कहने वाले आप, कहलाने वाले आप। इसी प्रकार से करने-कराने वाले आप हैं। जो हो गया है, जो हो रहा है या जो होगा सब आपके हुकम से ही है। यह सब समझ आपकी जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से मिली।

अब ए मैं जो हक की, खड़ी इलम हक का ले।
चौदे तबक किए कायम, सो भी मैं है ए।। १४ ।।

अब धनी का हुकम लेकर यह 'मैं' धनी (हक) की हो गई। जिसने चौदह तबकों के जीवों को अखण्ड किया, उस धनी की ही 'मैं' है।

ए मैं है हक की, ए है हक का नूर।
खास गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर।। १५ ।।

यह धनी की 'मैं' धनी का ही अंग है (नूर है) जो ब्रह्मसृष्टियों को जागृत करके परमधाम पहुंचाती है।

ए मैं इन विध की, सो मैं मरे क्यों कर।
पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावे घर।। १६ ।।

यह इस तरह की धनी की 'मैं' कैसे मर सकती है? यह धनी के चरणों में पहुंचाती है और सोए हुए को जगाती है।

एही मैं है हुकम, एही मैं नूर जोस।
एही मैं इलम हक का, एही मैं हक करे बेहोस।। १७ ।।

यही 'मैं' धनी का हुकम है। उनके तेज और जोश की शक्ति यही है। यही उनका तारतम ज्ञान है। इसी धनी की 'मैं' ने मुझे संसार से बेखबर कर दिया (अलग कर दिया) है।

Nijanand App

हक चलाए चल हीं, हक बैठाए रहे बैठ।
सोवे उठावे सब हक, नहीं हुकम आड़े कोई ऐंठ।। १८ ।।

अब मैं आपके चलाने से चलती हूं। बिठाने से बैठती हूं। सोना, उठाना सब आपके हाथ में है। अब आपके हुकम के सामने मेरी कुछ भी अकड़ नहीं है।

रोए हंसे हारे जीते, ईमान या कुफर।
जरा न हुकम सुध बिना, बंदगी या मुनकर।। १९ ।।

रोना, हंसना, हारना, जीतना, ईमान और कुफ्र, बन्दगी और मुनकिरी जरा भी आपके हुकम के बिना नहीं हो सकती।

ए जो मैं हक की, सो भी निकसे हक हुकम।
इन मैं में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम।। २० ।।

यह जो 'मैं' आपके हुकम से आई है वह आपके हुकम से ही निकलेगी। इस 'मैं' में कोई जाहिरी बन्धन नहीं है। यदि हम कुछ हों तो हम बांधें। जब हम कुछ हैं ही नहीं तो बंधें कैसे?

हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू रह्या न हमपना हम।
यों पोहोंचाई बका मिने, इन बिध मैं को खसम।। २१ ।।

हम अच्छे खासे दुनियां में बंधे थे। आपकी 'मैं' ने आकर ऐसा मिटाया कि हमारे अन्दर हम-पना कुछ नहीं रह गया और इस तरह आपने हमको अखण्ड घर अपनी 'मैं' की शक्ति से पहुंचाया।

अब सिर ले हुकम हक का, बैठी धनी की मैं।
जरा इन में सक नहीं, इलम हक के सें।। २२ ।।

अब धनी की 'मैं' धनी का हुकम लेकर मेरे अन्दर बैठी। यह तारतम वाणी से समझ लिया, इसलिए अब कोई संशय बाकी नहीं रहा।

जुदे सब थें इन बिध, इन बिध सब में एक।
सांच झूठ के खेल में, ए जो बेवरा कह्या विवेक।। २३ ।।

इस तरह से हम सब से अलग हो गए। इसी तरह सभी के अन्दर धनी की 'मैं' है। सच्चे ब्रह्मसृष्टि और झूठे संसार में इसका ब्यौरा और किस तरह से हो सकता है।

हुकम जोस नूर खसम, मैं ले खड़ी इलम ए।
ए पांचों काम कर हक के, पोहोंचे गिरो दोऊ ले।। २४ ।।

श्री राजजी का हुकम, जोश, अक्षर, जागृत बुद्धि और 'मैं' स्वयं इन पांचों शक्तियों से मिलकर धनी का काम (सुन्दरसाथ को जगाकर) किया और ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों जमात को लेकर घर (परमधाम) पहुंचे।

ए सातों भए इन विध, पोहोंचे बका में जब।
आप उठ खड़े हुए, पीछे खेल कायम किया सब।। २५ ।।

धनी का हुकम, जोश, अक्षर, जागृत बुद्धि तथा श्यामा महारानी ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि जब अपने अखण्ड घर पहुंचे तब अक्षर ब्रह्म ने जागृत होकर इस खेल के ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर लिया।

Nijanand App

मैं तो तेहेकीक न कछू, और न कछू मुझसे होए।
ए मैं विध विध देखिया, इन मैं में खतरा न कोए।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि मैं संसार में कुछ भी नहीं थी और न ही मुझसे कुछ होना था। अब धनी को मैंने हर तरह से देख लिया है और समझ लिया है कि इस धनी की 'मैं' में किसी प्रकार का खतरा नहीं है।

मैं ना अव्वल ना बीच में, न कछू मैं आखिर।
किया कराया करत हैं, सो सब हक कादर।। २७ ।।

मेरी 'मैं' (अहं) न शुरू में थी, न बीच में थी और न आखिरी में होगी। जो कुछ किया है या हो रहा है या होगा सब श्री राजजी महाराज ही करते हैं।

ए तेहेकीक हकें कर दिया, हकें लई कदम।
बुलाई अपना इलम दे, कर विध विध रोसन हुकम।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज ने यह निश्चित कराकर अपने चरणों में ले लिया। अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मेरे तरह-तरह से संशय मिटाए और अपने हुकम से मुझे बुला लिया।

हकें गिरो बुलाई मोमिन, हकें कराई सोहबत।
नूर पार वचन विध विध के, हकें दई नसीहत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों की जमात को बुलाकर मुझसे मिलवाया। अक्षर के पार अक्षरातीत धाम की सब हकीकत तरह-तरह से सुनाकर मुझे सिखापन दिया।

मैं नाहीं न जानों कछुए, मैं नाहीं जरा रंचक।
हकें इलम जोस देय के, करी सो हुकमें हक।। ३० ।।

मैं कुछ भी नहीं हूं। कुछ जानती भी नहीं। मेरा कोई रूप नहीं है। श्री राजजी महाराज ने अपना इलम और जोश देकर के अपने हुकम से मुझे खुदा बना दिया।

हकें किया हक करत हैं, और हकै करेंगे।
ए रूह को तेहेकीक भई, और नजरों भी देखे।। ३१ ।।

यह सब श्री राजजी महाराज ने किया है, कर रहे हैं और श्री राजजी ही करेंगे। यह मेरी आत्मा में निश्चित हो गया है और नजर से देख भी लिया है।

ए सब हक करत हैं, कौल फैल या हाल।
और मुझ में जरा न देखिया, बिना नूर जमाल।। ३२ ।।

हमारी कहनी, करनी और रहनी श्री राजजी के हुकम से ही होती है। अब मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज के बिना और कुछ भी दिखाई नहीं देता

अब इन बीच में खतरा, हक न आवन दे।
जिन दिल अर्स खावंद, तित क्यों कर कोई मूसे।। ३३ ।।

अब मेरे इस तरह से बदलने में श्री राजजी महाराज खुद ही कोई रुकावट नहीं आने देंगे, क्योंकि श्री राजजी महाराज जिनके दिल को अर्श करके बैठ गये हैं, उनको कोई किस तरह से कष्ट दे सकता है?

Nijanand App

दूजा तो कोई है नहीं, ए जो माया मन दज्जाल।
इलम देखे ए ना कछू, इत जरा नहीं जवाल।। ३४ ।।

यहां धनी के बिना कुछ है ही नहीं, अर्थात् इस तन में न माया है और न दज्जाल की बैठक ही है। तारतम ज्ञान से परखने पर ज्ञात हुआ कि यह सब कुछ नहीं है। मतलब कुछ है ही नहीं। जब कुछ है ही नहीं तो घाटा किस बात का? (गिरावट किस बात की)?

जब हकें इलम ए दिया, तेहेकीक रूह को तुम।
कर मनसा वाचा करमना, कोई ना बिना खसम हुकम।। ३५ ।।

जब श्री राजजी महाराज ने अपना तारतम ज्ञान दिया तो आत्मा के सब संशय मिट गए और मन, वचन और कर्म से दृढ़ता आ गई कि श्री राजजी महाराज के हुकम के बिना कुछ है ही नहीं।

ज्यों ज्यों एह विचारिए, त्यों तेहेकीक होता जाए।
इत जरा नूर-जमाल बिना, रूह में कछू न समाए।। ३६ ।।

इसमें जैसे-जैसे विचार करते हैं वैसे-वैसे और दृढ़ता आती जाती है कि धनी के बिना आत्मा में कुछ भी समा नहीं सकता।

रूहें तन हादीय का, हादी तन हैं हक।
नूर तन नूर-जमाल का, इत जरा नाहीं सक।। ३७ ।।

ब्रह्मसृष्टियां श्यामा महारानी के तन हैं और श्यामा महारानी श्री राजजी के तन हैं। अक्षर ब्रह्म भी अक्षरातीत का अंग हैं। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

ए मैं तैं सब हक की, ए इलम अकल धनी।
नूर जोस हुकम हक का, या विध है अपनी।। ३८ ।।

यह 'मैं' और तैं इलम, अकल, नूर, जोश, हुकम, सब धनी का है। इस तरह से यह सब हमारे हैं, क्योंकि मैं स्वयं श्री राजजी की अंगना हूं।

एह खेल हकें किया, आप भी संग इत आए।
अर्स में बैठे देखाइया, ऐसा खेल बनाए।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज ने यह सब खेल बनाया और स्वयं भी साथ में आए। परमधाम में बैठे हुए मोमिनों को ऐसा खेल बनाकर दिखाया।

भुलाए वतन आप खसम, खेल देखाए के जुदागी।
मेहेर करी इन विध की, बैठे खेलै में जागी।। ४० ।।

धनी ने इस प्रकार की जुदाई का खेल दिखाया कि हम घर को, धनी को और अपने आपको भूल गए। अब हमारे ऊपर ऐसी कृपा की कि हम खेल में बैठे जागृत हो गए।

जगाए लई रूहें अपनी, कदमों जो असल।
यामें संदेसा कहे, इत बैठे हैं सामिल।। ४१ ।।

धनी ने अपनी रूहों को जिनकी परआतम उनके चरणों के तले बैठी हैं, जगा लिया। धर्मग्रन्थ कहते हैं कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में यहां आकर बैठे हैं।

Nijanand App

इत ना मैं आई ना फिरी, ए तो हुकमें किया पसार।
ए मैं हुकमें मैं करी, अब हुकम देत मैं मार।। ४२ ।।

मैं इस दुनियां में न आई हूं और न ही वापस गई हूं। यह तो सब धनी के हुकम का पसारा है। यह मेरे अन्दर जो संसार की 'मैं' (अहं) आ गई थी, वह धनी के हुकम से आई थी । अब वह धनी का हुकम ही मेरी संसार की 'मैं' (अहं) को मार देता है।

जब लग मैं सुपने मिने, नहीं खसम पेहेचान।
तब लग मैं सिर अपने, बोझ लिया सिर तान।। ४३ ।।

जब तक मेरे अन्दर सपने की 'मैं' थी, तब तक श्री राजजी की पहचान नहीं थी। तब तक मैंने सारा बोझ अपने सिर पर ले लिया था कि मानो जैसे मैं ही सब कुछ करने वाली हूं।

अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम।
तब मैं में जरा न रही, मैं बैठी तले कदम।। ४४ ।।

अब इस संसार में धनी की तथा धनी के हुकम की पहचान हो गई तो मेरे अन्दर संसार की 'मैं' (अहं) तनिक मात्र भी नहीं रह गई और अपनी आत्मा को धनी के चरणों तले बैठा पाया।

इलम खुदाई ना होता, तो क्यों संदेसा पोहोंचत।
नूर-तजल्ला के अंदर की, कौन इसारतें खोलत।। ४५ ।।

यदि तारतम ज्ञान न होता तो धनी का सन्देश हमारे पास तक कैसे पहुंचता और परमधाम के अन्दर की सारी हकीकत जो धर्मग्रन्थों में लिखी है उसे कौन खोलता ?

सब मेयराज की इसारतें, कौन साहेदी कलमें देत।
जो अर्स अरवाहें इत न होती, तो मता खिलवत का कौन लेत।। ४६ ।।

रसूल साहब के मेयराज (दर्शन) में जो बातें इशारतों में कुरान में कही थीं उनके भेद कौन खोलता ? यदि अर्श के मोमिन संसार में न होते तो अर्श की खिलवत (मूल-मिलावे) की बातों को कौन लेता ?

चौथे आसमान लाहूत में, रूहअल्ला बसत।
पेहेले बताई फुरकानें, सो मोमिन भेद जानत।। ४७ ।।

चौथे आसमान (लाहूत) में श्यामा महारानी रहते हैं। यह बात कुरान में बताई, इस भेद को मोमिन भी जानते हैं, क्योंकि वह परमधाम के हैं।

कुन्जी नूर के पार की, रूहअल्ला दई मुझ।
केहे बातून मगज मुसाफ का, करों जाहेर जो है गुझ।। ४८ ।।

अक्षरधाम के पार अक्षरातीत परमधाम की तारतम ज्ञान की कुंजी श्यामा महारानी ने लाकर मुझे दी जिससे कुरान के छिपे भेदों के रहस्य मैं जाहिर कर रही हूं।

जो रखे रसूलें हुकमें, और सबन थें छिपाए।
सो मोको कुंजी देय के, कौल पर जाहेर कराए।। ४९ ।।

रसूल साहब ने हक के हुकम से जिन तीस हजार शब्दों को छिपाकर रखा था, उनके रहस्य मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी देकर समय पर जाहिर करवा दिए।

Nijanand App

तो गुनाह अर्स अजीम में, लिख्या सब मेयराज के माहें।
करें जाहेर अर्स दिल मोमिन, जित जबराईल पोहोंच्या नाहें।।५०।।

रसूल साहब ने कुरान में लिखा है कि परमधाम में रूहों को गुनाह लगा। यह भी लिखा है कि जहां जबराईल फरिश्ता नहीं पहुंच सकता। इस भेद को ब्रह्मसृष्टि ही जाहिर करेंगी जिनके दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं।

ए मैं बोले जो कछु, सो संदेसा रूहअल्ला जान।
ए इलम हकीकत वतनी, कहूं हक बिना न पेहेचान।।५१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं जो कुछ बोल रही हूं, वह श्यामा महारानीजी का ही सन्देश समझना। यह तारतम वाणी हमारे घर की सच्ची हकीकत है और श्री राजजी महाराज की पहचान बिना और कुछ बात नहीं है।

हक पैगाम भेजत है, सो देत साहेदी कुरान।
दे साहेदी खुदा खुदाए की, सो खुदाई करे बयान।।५२।।

श्री राजजी महाराज जो रूहों को सन्देश भेजते हैं, उसकी गवाही कुरान देता है। अब श्री महामतिजी के तन में स्वयं खुदा बैठकर अपनी पहचान खुद करवा रहे हैं और खुद ही अपनी गवाही दे रहे हैं।

सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर-जलाल पास नाहें।
सो रोसनी नूरजमाल की, लज्जत आवत मोमिनों माहें।।५३।।

मेरी आत्मा वह गवाही दे रही है जो अक्षर ब्रह्म के पास भी नहीं है। नूरजमाल श्री राजजी महाराज के ज्ञान की रोशनी मोमिनों में ही दिखाई पड़ती है और वह इसका आनन्द लेते हैं।

जब लग ख्वाब नजरों, तब लों देत देखाई यों कर।
न तो सुख नूरजमाल को, बैठे लेवें कायम घर।।५४।।

जब तक मोमिनों की नजर झूठे संसार में है तब तक ऐसा लगता है कि यह आनन्द कहीं से आकर मिल रहा है, वरना परमधाम में तो हम श्री राजजी महाराज का आनन्द हमेशा लेते ही हैं।

इलहाम आवत परदे से, सो नाहीं चौदे तबक।
सो मोमिन इन ख्वाब में, लेत सुख बेसक।।५५।।

धनी का सन्देश मेरे अर्श तन के परदे से आ रहा है जो सन्देश चौदह लोकों में नहीं है वही ब्रह्मसृष्टियां अब सपने के संसार में बेशक होकर सुख ले रही हैं। मेरा यह संसार का तन श्री राजजी का अर्श बन गया है।

झूठ न सुन्यो कबूं इत थें, जिन करो झूठी उमेद।
ए गुझ हक के दिल का, आवत तुमको भेद।।५६।।

मेरे अर्श तन ने कभी झूठ की बात को सुना ही नहीं था (अन्दर धनी बैठे हैं) झूठे संसार की चाहना भी मत करो। यह हक के दिल की अन्दर की बातों के रहस्य जो तुम्हें यहां खुल रहे हैं उसी को तुम सुख समझो।

आवत संदेसे परदे से, बीच गिरो मोमिन।
क्यों ना विचारो अकल सों, कर पाक दिल रोसन।।५७।।

मोमिनों की जमात में अर्श दिल से धनी के सन्देश आते हैं। हे मोमिनो! अपने दिल से विचार क्यों नहीं करते? अपने दिल को पाक कर ज्ञान से क्यों नहीं जगा देते?

Nijanand App

इतथें अर्ज भेजत हैं, सो पोहोंचत है हक को।
जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों।।५८ ।।

यहां अर्श दिल से जो प्रार्थना करते हैं वह श्री राजजी को पहुंचती है। यदि आप आत्मा की मूल बुद्धि से विचार करें, तो यह बात दिल में सच्ची लगती है।

तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल-असल।।५९ ।।

पवित्र दिल से धनी को की गयी विनती उनको अवश्य ही पहुंचती है। धनी ने हमें यहां तक पहुंचा दिया है कि हम असल घर परमधाम तक सोचने लगे हैं।

ए जो पाक दिलें विचारिए, देखो आवत इलहाम ए।
पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे।।६० ।।

यदि पवित्र दिल से विचार कर देखें तो धनी के इशारे हम तक पहुंचते हैं। यदि ऊपरी नजर से देखें तो वास्तविक हकीकत दिखाई नहीं देती।

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत।।६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम से खबरें (न्यामतें) यहां आती हैं वह हमारी परआतम देख रही है—जो श्री राजजी के चरणों तले बैठकर लज्जत ले रही है।

महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से।।६२ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! अब मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज की 'मैं' हो गई है और मैं हक की होकर परमधाम पहुंच गई। अब यह 'मैं' असल अर्श की है और यह श्री राजजी महाराज की कृपा से हुई।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १५१ ।।

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी! अब जिस तरह से आप चाहें उसी तरह से आप रखो। मैं आपकी हूं, क्योंकि संसार की 'मैं' (अहं) मुझ में नहीं रही। अब कहने को कुछ रहा ही नहीं जो आपसे कहूं।

कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम हीं हक जानत।।२ ।।

मेरे दिल में कुछ बातें आती हैं। वह आप ही पैदा कराते हैं। मेरे दिल के अन्दर-बाहर की सब हकीकत आप जानते हैं।

जो लों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए।
ए मैं मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे।।३ ।।

जब तक आपने मुझे संसार की 'मैं' देकर संसार में रखा, तब तक चाहना मेरी थी। फिर मैंने आपकी 'मैं' को मांगा। वह आपने मंगवाई (मेरी 'मैं' समाप्त हो गई)।

Nijanand App